ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

राजनीति के अंतर्कपाट खोलती कहानियां
(डॉ. मधु संधु की कहानियों के संदर्भ में)

डॉ. दीप्ति

सृजन युग चेतना की अभिव्यक्ति होने के साथ-साथ उसकी पहचान भी होती है। कहानी वह उत्औष्ट विधा है जिसके द्वारा रचनाकार सहज शब्दों में पाठक से संवाद कर पाता है। कहानियां यथार्थ जीवन की विप्रपता से पाठक का सहज ही साक्षात्कार करवा देती हैं। राजनीति किसी भी देश की रीढ़ की हïी होती है। जिस प्रकार रीढ़ की हïी के विकार के कारण मानव सीधा खड़ा नहीं हो सकता, उसी प्रकार सही राजनीति के अभाव में देश सीधा खड़ा नहीं रह पाएगा। देश की बागडोर राजनीतिज्ञों के ही हाथ होती है। वे चाहे तो देश को सही दिशा-निर्देश देकर प्रगति के राह पर अग्रसर कर सकते हैं, चाहे तो अवनति के मार्ग पर। हमारे देश में प्राचीनकाल में राजा अपने राज्य का कार्यभार संभालते थे। कालांतर में लोकतंत्र के मंत्री, तानाशाह, कुलीन तंत्र, राजतंत्र, गणतंत्र इत्यादि राजनीति का मुखौटा बन गए हैं। राजा श्रीराम का 'रामराज्य की कल्पना' आज भी आदर्श राजा व राज्य का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण माना जाता है।

कोई भी सृजक अपने देश की राजनीतिक परिस्थितियों व राजनीतिज्ञों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता है। उनकी रचनाओं में तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों की झलक स्वयंमेव मिलती है। कतिपय रचनाकारों ने राजनीतिक कहानियों पर अपनी कलम चलाई है, जिनमें डॉ. मधु संधु का नाम विशेष रूपेण उल्लेखनीय है। डॉ. मधु संधु हिंदी साहित्य की जागरूक व संवेदनशील प्रतिभा की हस्ताक्षर है। उनकी कतिपय कहानियों में राजनीतिक परिवेश का यथार्थ अंकन दृष्टिगोचर होता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में उनके श्रेष्ठ कहानी संग्रह 'दीपावली / अस्पताल. कॉम' की लघु कथाओं-बेचारा अलादीन, इमेज, वोट नीति, बीजी कहानियों के संदर्भ में राजनीति की वास्तविकता को उजागर करने का प्रयास है।

'बेचारा अलादीन' लघु कहानी एक मंत्री के आसमान छूने से लेकर जमीन पर आने की यात्रा की कथा है। प्रस्तुत कहानी मंत्री बनने के पश्चात् उसके मद, अहंकार एवं अवसरवादिता के दांव-पेच को बखूबी चित्रित करती है। "चारों ओर जित्र ही जित्र थे- सभ्य, सुशील, संभ्रांत- बड़े-बड़े

Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

आफिसर, बिजनेस मैगनेट, पार्टी के वर्कर। 'जो हुक्म मेरे आका'- सुनने का मज़ा भी अलग था और नशा भी।"[1] इस प्रकार प्रस्तुत कहानी का मंत्री सरकार के स्थायीत्त्व तक सत्ता का भरपूर 'सदुपयोग' करता है परंतु कहा जाता है कि समय कभी ठहरता नहीं। समय बदलने में देर नहीं लगती है। प्रस्तुत कहानी के अलादीन को भी अगले चुनाव में मुंह की खानी पड़ती है, जब उसके ही जिन्न को मंत्री बनाकर अलादीन बना दिया जाता है और वह आश्चर्यचकित स्तब्ध सा रह जाता है।

'इमेज' लघु कहानी राजनीतिक पार्टी के सक्रिय सदस्य की कहानी है जो प्रौढ़ावस्था में आनंद लूटने की इच्छा पूर्ति हेतु अपना सर्वस्व गंवा बैठता है। "बची खुची ज़िन्दगी को जी भी जीने के लिए वे होटलों में कॉल गर्ल्ज़ के लिए डोलने लगे।"[2] वह सावधानीपूर्वक होटल का कमरा मैनेजर के अतिथि के नाम बुक करवाते है। उस दिन वह पार्टी की मीटिंग भी अवश्य रखते ताकि वह किसी झंझट में न फंसे। कहते हैं कि सच्चाई छुपाए नहीं छुपती है। झूठ चिरकाल तक स्थिर नहीं रह सकता है। इसी तरह विरोधी-अवरोधी उनके रहस्य से पर्दा हटा कर उन्हें बेनकाब कर ही देते हैं जिसके परिणाम स्वरूप पार्टी वाले भी अपना पल्ला झाड़ते हुए और अपना दामन बचाने की कोशिश में उन्हें पार्टी से निष्कासित करने में भी देर न लगाते हैं। घर के पारिवारिक सदस्य भी उनका बाय काट कर देते हैं। सगे-संबंधी और दोस्त उनका साथ छोड़ देते हैं। उसका राजनीतिक कैरियर तहस-नहस होने के साथ-साथ पारिवारिक जीवन भी बदहाल हो जाता है। आधुनिकता के दौर में प्रौढ़ावस्था में वासना के वशीभूत होकर आनंद लूटने की चाह रखने वाला प्रौढ़ यथार्थ जीवन का वास्तविक पात्र है। प्रायः समाचार पत्रों में भी हम नित्य-प्रतिदिन मंत्रियों के चारित्रिक पतन के समाचार पढ़ते हैं। शासन की बागडोर संभालने वाले मंत्रियों का चारित्रिक पतन गंभीर समस्या है। प्रस्तुत कहानी आधुनिकता के समय के 'मॉर्डन पात्र' की वास्तविकता से परिचय करवा कर आधुनिक युग में प्रासंगिकता सिद्ध करने में नितांत सफल रही है।

'वोट-नीति' लघु कथा लोकतांत्रिक राजनीतिज्ञों को बेनकाब कर उनकी वास्तविकता को उजागर करती है। नागरिकों को सुरक्षा प्रदान करना व शांतिपूर्ण वातावरण बनाने का दायित्व राजनीतिज्ञों का माना जाता है परंतु यथार्थ में राजनीतिज्ञों का इन बातों से दूर-दूर तक कोई लेना देना नहीं होता। राजनीतिज्ञ अपने वोट बैंक के लिए नागरिकों को सुरक्षा प्रदान करने की अपेक्षा चोरों को संरक्षण प्रदान कर अशांतिपूर्ण वातावरण बनाने में अपना भरपूर योगदान देते हैं। प्रस्तुत कहानी में सार्वजनिक स्थलों पर चोरों द्वारा चोरी करने की घटना का वर्णन है। "उसने एसिड की कुछ बूंदे उसकी चेन पर लगाई और चेन उसके हाथ में आ गई।.. उसने चेन पीछे खड़ी लाजो की ओर फेंकी और बस चलने से पहले ही वह खिसक गई।"[3] ऐसे ही एक बार चोरी करते हुए तेज सवारी द्वारा शोर मचा दिया जाता है। वह इलाके का एम.एल.ए. जुटाकर थाने जाता है और थानेदार द्वारा शिनाख्त करवाने

Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

पर झुग्गी में मीतो और साथ के आदमी की पहचान करके उसे थानेदार को पकड़वा देता है। इतनी कड़ी मेहनत के पश्चात् उसे लगता है कि वह अपना पर्स वापस पा लेगा। "पर यह वोट बैंक वाले लोग थे। प्रजातंत्र इन्हीं के द्वारा इन्हीं के लिए तो बनता है। अगले दिन एम.एल.ए. साहिब वोट नीति वाली जेब को सहलाते स्वयं थाने में उपस्थित थे।"[4] प्रस्तुत कहानी में प्रजातंत्र के आदर्शों, मूल्यों की खुलेआम धज्जियां उड़ाते प्रजातंत्र के राजनीतिज्ञों की कारगुजारियों को चिन्हित किया गया है। जनसामान्य के दुख व परेशानी से उन्हें कोई लेना देना नहीं होता है। यदि कोई व्यक्ति स्वयं साहस करके इन अपराधियों को पकड़वाकर सिस्टम को सुधारने का प्रयास करता भी है तो ये स्वार्थी राजनीतिज्ञ उसे सफल नहीं होने देते हैं। इन्हें तो केवल अपना उल्लू सीधा करना होता है। इनका मंतव्य केवल वोट लेना होता है, उसके लिए वे किसी भी हद तक जा सकते हैं। प्रस्तुत कहानी में चोर को जेल से छुड़वाने के लिए एम.एल.ए. का स्वयं थाने में उपस्थित होना प्रजातंत्र के इन सेवकों के आदर्शों व मूल्यों पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करने में समर्थ है।

'बीजी' कहानी में नेता के करिंदों का वर्णन है। चुनाव के दिनों में नेताजी के साथ-साथ उनके करिंदे भी सक्रिय हो जाते हैं। नेता जी अक्सर उन्हीं पर पूरे गांव व शहर से प्रत्येक व्यक्ति को लाने छोड़ने का भार डालते हैं। करिंदे करिंदे है और उनका वह दिन अति व्यस्त भी रहता है। 'बीजी' कहानी जहां अपना उल्लू सीधा करने वाले इन करिंदों की कारगुजारियों पर प्रकाश डालती है, वहीं चुनाव के दिन वृद्धों की दयनीय दशा का भी यथार्थ चित्रण करती है। चुनाव के दिन अक्सर हम अपनी आंखों से देखते हैं कि मतदान केंद्रों पर वोट देने के लिए किसी तरह अंधे, लाचार, अपाहिज, वृद्धों को करिंदे अपनी पार्टी के पक्ष में वोट डलवाने के लिए जबरन व लालच देकर लाते हैं। ऐसा कहा जाता है कि वोट देना प्रत्येक नागरिक का अधिकार है। जबकि नेता जी का कहना है कि प्रत्येक वोटर का जैसे-तैसे अपनी पार्टी के निशान पर वोट दिलवाना उनके करिंदों का कर्तव्य है। प्रस्तुत कहानी में वृद्धा बीजी को सरपंच साहूकार का करिंदा गुरप्रीत सुबह सवेरे ही चुनाव के दिन वोट डलवाने के लिए ले जाता है। बीजी को ले जाते समय कहता है, "चिंता काहे की, मैं बीजी को ले जा रहा हूँ तो छोड़ भी जाऊँगा। बस! दस मिनट में गया और आया। गाड़ी पास है। इस वक्त भीड़ नहीं होती। वोट ही तो डालना है।"[5] 90 वर्षीय बीजी बहुत देर तक वापस घर नहीं लौटती है तो उसके घर वाले परेशान हो जाते हैं और गुरप्रीत का भी कुछ पता नहीं होता है। शाम के समय एक रिक्शा पर अजनबी के साथ बीजी घर वापस आती है। उन्हें घर छोड़ने वाला प्रीजाइडिंग ऑफिसर बताता है, "बहन जी सुबह आई थी बीजी और वोट डालने के बाद सारा दिन वहीं एक काठ के बेंच पर आधी बेहोशी में लेटी रही। वोट डलवाने के बाद लाने वालों को वापस पहुंचाने का होश कहाँ? मेरे साथी भी पते ठिकाने ढूंढ कर और वृद्धाओं को छोड़ने गए हैं।"[6] प्रस्तुत कहानी में वृद्धा के वोट का अपनी पार्टी के हित में दुरुपयोग कर

Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

उसे अकेला व लाचार मतदान केन्द्र पर ही छोड़ने और उस की दुर्दशा के द्वारा मंत्रियों के इन करिंदों को बेनकाब कर इनके अन्यायकारी व दमनकारी रूप को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में लेखिका ने प्रस्तुत कहानियों के पात्रों को इस प्रकार सृजित किया है कि वे आज के राजनीतिज्ञों की वास्तविकता को पाठक के सामने उजागर करते हैं। सत्ता को किसी भी तरह हासिल करने के लिए वे साम-दाम-दंड-भेद सभी का प्रयोग करते हैं और एक बार कुर्सी मिलने पर वे अच्छे से इसका 'सदुपयोग' करते हैं। सत्ता के स्थायीत्व के लिए चाहे उन्हें लुटेरों, चोरों को संरक्षण ही क्यों ना देना पड़े। सत्ता के क्रूर दमनकारी चेहरे से अवगत करवाना ही इन कहानियों का प्रमुख कथ्य है। ये राजनीतिज्ञ समाज की अन्यायकारी रूढ़ियों के द्वारा वंचित वर्गों का शोषण करने से भी नहीं चूकते है। वोट बैंक के लिए नेता जी के करिंदे वोटर को मनुष्य न समझ कर उन्हें शतरंज का निजी मोहरा समझते हैं जिसका वे निजी स्वार्थों की पूर्ति हेतु शोषण करने से भी नहीं चूकते है। प्रस्तुत कहानियों में राजनीतिज्ञों का चारित्रिक पतन, राजनीतिक भ्रष्टाचार, सत्ता के दुरुपयोग के द्वारा वर्तमान राजनीतिक समस्याओं को उभारना सफल एवं सार्थक प्रयास है।

Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) डॉ. मधु संधु, 'दीपावली / अस्पताल.कॉम', बेचारा अलादीन, (नई दिल्ली : अयन प्रकाशन, 2015), पृ. 109
2) डॉ. मधु संधु, 'दीपावली / अस्पताल.कॉम', इमेज, (नई दिल्ली : अयन प्रकाशन, 2015), पृ. 111
3) डॉ. मधु संधु, 'दीपावली / अस्पताल.कॉम', वोट नीति, (नई दिल्ली : अयन प्रकाशन, 2015), पृ. 122
4) डॉ. मधु संधु, 'दीपावली / अस्पताल.कॉम', वोट नीति, (नई दिल्ली : अयन प्रकाशन, 2015), पृ. 122
5) डॉ. मधु संधु, 'दीपावली / अस्पताल.कॉम', बीजी, (नई दिल्ली : अयन प्रकाशन, 2015), पृ. 114
6) डॉ. मधु संधु, 'दीपावली / अस्पताल.कॉम', बीजी, (नई दिल्ली : अयन प्रकाशन, 2015), पृ. 114

डॉ. दीप्ति
सहायक प्रोफेसर
हिंदी विभाग,
हिंदू कॉलेज,
अमृतसर, पंजाब।

Copyright ⓒ 2020 Authors